डॉ. बिभा कुमारी

विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा

बीए प्रतिष्ठा, हिंदी, तृतीय वर्ष, अष्टम पत्र

काव्य में प्रतीक – योजना

प्रतीक का शाब्दिक अर्थ है – चिह्न। रसायन विज्ञान में सभी धातुओं के लिए प्रतीक निर्धारित हैं। जैसे – सोना के लिए (Au), चांदी के लिए (Ag) इत्यादि। साहित्य में किसी अदृश्य, अप्रकट या अमूर्त वस्तु का प्रतिनिधित्व करने वाला सांकेतिक पदार्थ प्रतीक है। प्रतीक अभिव्यक्ति का एक शक्तिशाली माध्यम है। प्रतीक मानवीय संवेदना को गहराई से छूते हैं। वास्तव में प्रतीक भी एक विशिष्ट प्रकार का बिम्ब अथवा उपमान ही है। कुछ उपमान अथवा बिम्ब निरंतर प्रयोग के कारण जब रूढ़ हो जाते हैं तो रूढ़ अर्थ में ही सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में स्वीकृत कर लिए जाते हैं, और इस तरह से वे प्रतीक की श्रेणी में आ जाते हैं। बार – बार अप्रस्तुत रूप में दुहराए गए बिम्ब ही प्रतीक बनते हैं। साथ ही परंपरा से हटकर सर्वथा नवीन एवं विशिष्ट प्रतीकों का प्रयोग भी कवि कर सकता है। इसी प्रकार दूसरी भाषाओं के साहित्य तथा साहित्येतर विधाओं से भी वह सशक्त प्रतीकों को ग्रहण करने के लिए स्वतंत्र होता है। प्रतीक का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। शब्द शक्ति के भेदों लक्ष्यार्थ तथा व्यंग्यार्थ में भी प्रतीक समाहित है। डॉ. भगीरथ मिश्र ने प्रतीक को परिभाषित करते हुए हुए कहा है –

“अभिव्यक्ति – शिल्प के प्रसंग में प्रतीक विधान का भी अपना महत्व है। प्रतीक – विधान एक प्रकार से अलंकार का एक रूप है। सादृश्य के अभेदत्व का घनीभूत रूप प्रतीक है। ऐसी दशा में रूपक कहीं अत्याधिक रूढ़ सर्वमान्य स्वरूप है जिसमें अप्रस्तुत से ही काम चल जाता है, प्रतीक के रूप में हमारे सामने आता है।”

प्रतीक काव्य में अर्थ – गाम्भीर्य तथा कल्पना की अभिव्यक्ति का प्रभावशाली माध्यम है। इसी दृष्टि से मार्टिन टर्नेल ने कहा है –

“प्रतीक एक कल्पनात्मक अनुभव के माध्यम के सिवाय कुछ नहीं है।”

(A symbol is nothing but the vehicle of imaginative experience.)

अनेक विद्वानों और कवियों ने प्रतीक को अलग – अलग रूपों में परिभाषित किया है।

वास्तव में कवि जिस वास्तविकता का साक्षात्कार करता है उसका उसी रूप में वर्णन करना उसके लिए संभव नहीं होता है। उस सत्य की अभिव्यक्ति के लिए उसे बिम्ब और प्रतीक आदि का सहारा लेना पड़ता है।

बिम्ब और प्रतीक में पर्याप्त निकटता और समानता है तथापि दोनों में अंतर भी है। बिम्ब और प्रतीक में प्रमुख अंतर निम्नलिखित हैं –

1.बिम्ब नवीन होता है, प्रतीक रूढ़।

2. बिम्ब का प्रयोजन चित्रण प्रस्तुत करना होता है जबकि प्रतीक संकेतमूलक होता है।

3. बिम्ब में स्पष्टता होती है, जबकि प्रतीक संकेतमूलक होने के कारण उतना स्पष्ट नहीं होता है।

4. बिम्ब में चित्रमयता एवं सजीवता होती है, जबकि प्रतीक संकेतक होते हैं।

5.बिम्ब प्रतीक की अपेक्षा अधिक स्थूल होता है। प्रतीक द्वारा बिम्ब जैसा प्रत्यक्षीकरण संभव नहीं है।

6. बिम्ब में विस्तार एवं व्यापकता होती है, जबकि प्रतीक में संक्षिप्तता एवं गहराई होती है।

प्रतीक की प्रमुख विशेषताएं हैं –

1.प्रतीक काव्यगत अनुभूति के वाहक होते हैं।

2. प्रतीक अप्रस्तुत वर्णन के शक्तिशाली माध्यम हैं।

3. प्रतीक के माध्यम से काव्य में संक्षिप्तता, संकेतात्मकता और प्रभावात्मकता आदि विशेषताएं आती हैं।